B.A Part-1 (Sub.) Topic- Characteristics and Limitations of Insight Theory. Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt. of Psychology, Vaishali Mahila College, Hajipur)

गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने सूझ द्वारा सीखने की प्रक्रिया की कुछ विशेषताएं बतलाया है जो इस प्रकार है-

1. सीखने की प्रक्रिया सूझ पर आधारित होती है जो एक प्रकार का 'अहा अनुभव' (aha experience) है। सूझ व्यक्ति में अचानक उस समय होती है जब वह लक्ष्य पर पहुंचने के उपायों के बीच प्रत्यक्षज्ञानात्मक संबंधों को ठीक ढंग से समझ लेता है क्योंकि सूझ अचानक होती

है इसलिए सीखने की प्रक्रिया भी अंतर्दृष्टि सिद्धांत के अनुसार अचानक होती है।

2. सूझ उत्पन्न होने के लिए यह आवश्यक है कि प्राणी के सामने जो समस्यात्मक परिस्थिति है उसका ठीक ढंग से वह निरीक्षण करें।

3. सूझ द्वारा सीखने में व्यक्ति का ध्यान समस्यात्मक परिस्थिति के विभिन्न हिस्सों पर निर्देशित होता है। वह समस्या के समाधान के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार का व्यवहार एक के बाद एक परंतु सोच समझकर करता है। वनमानुष द्वारा केला प्राप्त करने के लिए पिंजरे में से हाथ बढ़ाना, पैर बढ़ाना, फिर छड़ी बढ़ाना आदि

कुछ अन्वेषणात्मक व्यवहार के उदाहरण हैं। सूझ उत्पन्न होने के बाद प्राणी यह समझ जाता है कि इसमें सभी व्यवहार अर्थपूर्ण नहीं थे।

4. जब प्राणी समस्या का समाधान करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार का अन्वेषणात्मक व्यवहार करता है और फिर भी उसे सफलता नहीं मिलती है तो वह थोड़ी देर के लिए उदास हो जाता है और निष्क्रिय होकर चुपचाप बैठ जाता है। इस तरह उसमें शिथिलता आ जाती है। जैसे जब वनमानुष उछल-कूद कर छत से लटकते केले को प्राप्त नहीं कर सका तो

थोड़ी देर के लिए निष्क्रिय होकर चुपचाप बैठ गया था।

5. कोहलर का कहना है कि जब प्राणी समस्या का समाधान करने के प्रयास में शिथिल एवं निष्क्रिय हो जाता है तो फिर कुछ समय के बाद अचानक उसमें सूझ अपने आप उत्पन्न हो जाता है और समस्या का समाधान वह कर लेता है। सूझ उत्पन्न होने से व्यक्ति में लक्ष्य तथा उपाय के बीच एक स्पष्ट संबंध दिखाई देने लगता है। खेल-खेल में जब दोनों छड़ी आपस में जुड़कर बड़ी हो जाती है तो वनमानुष उल्लास के साथ उस जुड़ी हुई

छड़ी के सहारे केले की ओर दौड़ पड़ता है और उसे प्राप्त कर लेता है।

<u>सूझ का सिद्धांत महत्वपूर्ण होने के बावजूद इस सिद्धांत के कुछ परीसीमाएं हैं जो निम्नांकित है-</u>

1. सूझ सिद्धांत के अनुसार सीखने की प्रक्रिया अचानक होती है क्योंकि सूझ एक अचानक होने वाली प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि वास्तव में प्राणी किसी अनुक्रिया को अचानक नहीं सीखता है बल्कि वह धीरे-धीरे कुछ अभ्यास द्वारा सीखता है। डंकर (Dunker, 1945) ने कहा है कि सूझ

क्रमिक होती है तथा इसकी मात्रा कम या अधिक हो सकती है। जटिल कार्यों को सीखने में सूझ की मात्रा अधिक होती है तथा जब हम साधारण कार्य को करना सीखते हैं तो उसमें सूझ की मात्रा कम होती है।

2. यह सिद्धांत सीखने में सिर्फ सूझ के महत्व पर प्रकाश डालता है और साथ ही साथ यह भी दावा करता है कि सभी तरह के प्राणी सूझ द्वारा ही किसी अनुक्रिया को सीख पाते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इसका खंडन करते हुए कहा है कि सीखने में अभ्यास तथा अनुभूति का भी स्थान होता है। इन लोगों

का यह भी कहना है कि छोटे-छोटे शिशुओं के सीखने में सूझ का कोई खास महत्व नहीं होता। प्राय: वे विषय को रटकर एवं अभ्यास करके ही सीखते हैं।

इन सीमाओं के बावजूद भी सूझ सिद्धांत का महत्व काफी है और मनोवैज्ञानिकों द्वारा इसे एक अनुपम योगदान माना जाता है।